BARAKATE ZAKAT (HINDI BAYAAN)

बरकाते ज़कात

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الاعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद आने पर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

क़बूलिय्यते दुआ का परवाना

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ाला बिन उ़बैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (मस्जिद में) तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक आदमी आया, उस ने नमाज़ पढ़ी और फिर इन कलिमात से दुआ मांगी : اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَارْحَمْنِيْ या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे बख़्श दे और मुझ पर रह़्म फ़रमा। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : عَجِلْتَ اَيُّهَا الْمُصَلِّيْ اِذَا صَلَّيْتَ فَقَعَدْتَ فَاحْمِدِ اللّٰهَ بِمَا هُوَ اَهْلُهٗ، وَصَلِّ عَلَيَّ ثُمَّ ادْعُهُ، ऐ नमाज़ी तू ने जल्दी की। जब तू नमाज़ पढ़ कर बैठे तो (पहले) **अल्लाह** तआ़ला की ऐसी ह़म्द कर जो उस के लाइक़ है और मुझ पर दुरूदे पाक पढ़, फिर इस के बा'द दुआ मांग।''

रावी का बयान है कि इस के बा'द एक और शख़्स ने नमाज़ पढ़ी, फिर (फ़ारिग़ हो कर) **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द बयान की और हुज़ूर عَلَیْہِ الصلوٰۃُ وَالسَّلام पर दुरूदे पाक पढ़ा तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اُدْعُ تُجَبْ اَيُّهَا الْمُصَلِّيْ ऐ नमाज़ी ! तू दुआ मांग, क़बूल की जाएगी।''(1)

---

1 . . . ترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی جامع الدعوات . . . الخ، ۵/ ۲۹۰، حدیث: ۳۴۸۷

www.dawateislami.net

बयान कर्दा रिवायत से मा'लूम हुवा कि अगर दुआ़ मांगने वाला क़बूलिय्यत का त़ालिब है, तो उसे चाहिये कि दुआ़ के अव्वलो आख़िर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم पर दुरूदे पाक पढ़ा करे ।

बचे बेकार बातों से, पढ़ें ऐ काश कसरत से

तेरे मह़बूब पर हर दम दुरूदे पाक हम, मौला

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ात़िर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं । फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है ।

(اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير لِلطَّبَرانی ج٦ ص١٨٥ حديث ٥٩٤٢)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता ।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

बयान सुनने की निय्यतें :

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ात़िर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा । ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा । ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बयान करने की नियतें :

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा । ۞ देख कर बयान करूंगा । ۞ पारह 14 सूरतुन्नहूल, आयत नम्बर 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِیْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَ الْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (ह़दीस 3461) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : **بَلِّغُوْا عَنِّیْ وَلَوْ اٰیَةً :** ''पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो'' (ماجاء فی جامع الدعوات...الخ، ۵/ ۲۹۰، حدیث:۳۴۸۷ ترمذی، کتاب الدعوات، باب) में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा । ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा । ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इ़ल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा । ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा । ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा । ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेह्न बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ारून की हलाकत

क़ारून, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के चचा यसहर का बेटा था । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस को बे पनाह दौलत से नवाज़ा था । ह़त्ता कि उस के ख़ज़ानों की चाबियां ऐसे चालीस(40) अफ़राद उठाते थे, जो आ़म मर्दों से ज़ियादा त़ाक़तवर थे ।(1) जैसा कि पारह 20, सूरतुल क़सस, आयत नम्बर 76 में इरशादे बारी तआ़ला है ।

1...تفسیرِ خازن، پ۲۰، القصص، تحت الآیۃ:۷۶، ۳/ ۴۴۰ ملتقطاً

www.dawateislami.net

وَاٰتَیْنٰهُ مِنَ الْكُنُوْزِ مَاۤ اِنَّ مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓاُ بِالْعُصْبَةِ اُولِی الْقُوَّةِ (پ۲۰،القصص:۷۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हम ने उस को इतने ख़ज़ाने दिये जिन की कुंजियां एक ज़ोर आवर जमाअ़त पर भारी थीं।*

जब **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने बनी इस्राईल पर ज़कात का हुक्म नाज़िल फ़रमाया तो क़ारून, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास आया और आप عَلَیْهِ السَّلَام से येह तै़ किया कि एक हज़ार (1000) दीनार पर एक दीनार, हज़ार (1000) दिरहमों पर एक दिरहम जब कि हज़ार (1000) बकरियों पर एक बकरी और इसी त़रह़ दीगर चीज़ों में से भी हज़ारों ह़िस्से ज़कात देगा। चुनान्चे, जब उस ने घर जा कर अपने माल की ज़कात का ह़िसाब किया तो वोह बहुत ज़ियादा माल बन रहा था, उस के नफ़्स ने इतना ढ़ेर सारा माल देने की हिम्मत न की, जिहाज़ा उस ने बनी इस्राईल को जम्अ़ कर के कहा कि तुम ने मूसा عَلَیْهِ السَّلَام की हर बात में इत़ाअ़त की, अब वोह तुम्हारे माल लेना चाहते हैं क्या कहते हो ? उन्हों ने कहा : तुम हमारे बड़े हो, जो चाहो हुक्म दो। क़ारून ने कहा कि फ़ुलां बद चलन औ़रत के पास जाओ और उस से एक मुआ़वज़ा मुक़र्रर करो कि वोह ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام पर तोह्मत लगाए, जब ऐसा होगा तो बनी इस्राईल, ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام को छोड़ देंगे। चुनान्चे, क़ारून ने उस औ़रत को एक ह़ज़ार (1000) दिरहम और एक हज़ार (1000) दीनार दे कर इस बात पर राज़ी किया कि वोह ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام पर तोह्मत लगाए। अगले दिन क़ारून ने बनी इस्राईल को जम्अ़ किया और ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام के पास आ कर कहने लगा कि बनी इस्राईल आप का इन्तिज़ार कर रहे हैं, आप उन्हें वा'ज़ व नसीह़त फ़रमाएं। ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام तशरीफ़ लाए और बनी इस्राईल को नसीह़त करते हुवे

www.dawateislami.net

मुख़्तलिफ़ गुनाहों की सज़ाएं बयान फ़रमाईं । क़ारून कहने लगा : क्या येह हुक्म सब के लिये है, ख़्वाह आप ही हों ? आप ने फ़रमाया : ख़्वाह मैं ही क्यूं न होऊं । कहने लगा : बनी इस्राईल का ख़याल है कि आप ने फुलां औरत के साथ बदकारी की है ।

हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : उसे बुलाओ । वोह आई तो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : तुझे उस ज़ात की क़सम ! जिस ने बनी इस्राईल के लिये दरिया फाड़ा और उस में रस्ते बनाए और तौरैत नाज़िल की, सच बात कहो । वोह औरत डर गई और उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल पर बोहतान लगा कर उन्हें ईज़ा देने की जुरअत न हुई, उस ने अपने दिल में कहा कि इस से तौबा करना बेहतर है । चुनान्चे, उस ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ की, कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जो कुछ क़ारून कहलवाना चाहता है वोह झूट है, सच तो येह है कि इस ने मुझे कसीर माल का लालच दिया ताकि मैं आप पर तोहमत लगाऊं ।" येह सुन कर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام अपने रब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर रोते हुवे सजदे में गिरे और येह अ़र्ज़ करने लगे : या रब ! عَزَّوَجَلَّ अगर मैं तेरा रसूल हूं तो मेरी ख़ातिर क़ारून पर अपना ग़ज़ब फ़रमा । **अल्लाह** तआ़ला ने आप की तरफ़ वही फ़रमाई कि मैं ने ज़मीन को आप की फ़रमां बरदारी करने का हुक्म दिया है, आप इस को जो चाहें हुक्म दें । हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बनी इस्राईल से फ़रमाया : ऐ बनी इस्राईल **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे क़ारून की तरफ़ भेजा है जैसे फ़िरऔन की तरफ़ भेजा था, जो क़ारून का साथी हो, उस के साथ उस की जगह ठहरा रहे और जो मेरा साथी हो वोह अलग हो जाए । सब लोग क़ारून से जुदा हो गए और दो अफ़राद के सिवा कोई उस के साथ न रहा । तब हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने ज़मीन को हुक्म दिया : يَا اَرْضُ خُذِيْهِمْ या'नी ऐ ज़मीन इन्हें पकड़ ले ! तो वोह घुटनों तक ज़मीन में धंस गए । आप ने दोबारा येही फ़रमाया तो कमर तक धंस गए, आप येही फ़रमाते रहे हत्ता कि वोह लोग गर्दनों तक धंस गए, अब वोह गिड़ गिड़ाने लगे

www.dawateislami.net

और क़ारून, आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़समें और रिश्ता व क़राबत के वास्ते देने लगा, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने शिद्दते जलाल के सबब तवज्जोह न फ़रमाई, यहां तक कि वोह बिल्कुल धंस गए और ज़मीन बराबर हो गई ।

हज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि वोह क़ियामत तक ज़मीन में धंसते ही चले जाएंगे । बनी इस्राईल ने कहा कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने क़ारून के मकान और उस के ख़ज़ाइन व अमवाल की वजह से उस के लिये बद दुआ़ की । येह सुन कर आप ने दुआ़ की तो उस का मकान और उस के ख़ज़ाने व अम्वाल सब ज़मीन में धंस गए ।[1]

अल्लाह रब्बुल आ़लमीन جَلَّ جَلَالُہٗ ने कुरआने मजीद व फ़ुरक़ाने हमीद में क़ारून के अन्जाम को कुछ इस त़रह़ बयान फ़रमाया है चुनान्चे, पारह 20 सूरतुल क़सस, आयत नम्बर 81 में इरशाद होता है :

فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ الْاَرْضَ ۫ فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۫ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ ﴿۸۱﴾ (پ۲۰، القصص: ۸۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो हम ने उसे और उस के घर को ज़मीन में धंसा दिया तो उस के पास कोई जमाअ़त न थी कि* **अल्लाह** *से बचाने में उस की मदद करती और न वोह बदला ले सका ।*

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि दुन्यवी माल की मह़ब्बत में ज़कात देने से इन्कार करने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल से दुश्मनी मोल लेने वाले बद बख़्त क़ारून का अन्जाम कैसा भयानक हुवा, न उसे माल काम आया न उस के ख़ज़ाने, बल्कि वोह अपने ख़ज़ानों समेत ही अ़ज़ाब की लपेट में आ गया । सूरतुल क़सस में बयान कर्दा इस वाक़िए़ से जहां माले दुन्या से मह़ब्बत का भयानक अन्जाम पता चलता है, वहीं **ज़कात की अहम्मिय्यत** भी ब ख़ूबी वाज़ेह़ हो रही है ।

---

1 ... تفسیر خازن، پ۲۰، القصص، تحت الآیۃ: ۸۱، ۳/۴۴۲ ملخصاً

www.dawateislami.net

फ़र्ज़िय्यते ज़कात

याद रहे कि उम्मते मुहम्मदिय्या पर भी ज़कात की अदाएगी फ़र्ज़ की गई है । चुनान्चे पारह 1, सूरतुल बक़रह, आयत नम्बर 43 में इरशादे बारी तआ़ला है :

وَاَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ (پ۱،البقرة:۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो ।

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयत के तह़्त लिखते हैं : इस आयत में नमाज़ व ज़कात की फ़र्ज़िय्यत का बयान है ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़कात अरकाने इस्लाम में से एक रुक्न है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : इस्लाम की बुन्याद पांच[5] बातों पर है, इस बात की गवाही देना कि **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) उस के रसूल हैं, नमाज़ क़ाइम करना, ज़कात अदा करना, ह़ज करना और रमज़ान के रोज़े रखना ।[1]

ज़कात की अहम्मिय्यत का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि क़ुरआने मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद में नमाज़ और ज़कात का एक साथ 32 मरतबा ज़िक्र आया है । (ردالمحتار، کتاب الزکوۃ، ج۳، ص۲۰۲)

अहम्मिय्यते ज़कात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कोई भी मुल्क ख़्वाह मआ़शी त़ौर पर कितना ही तरक़्क़ी याफ़्ता क्यूं न हो, लेकिन उस में लोगों का एक ऐसा त़बक़ा ज़रूर होता है जो मुख़्तलिफ़ वुजूहात के बाइस ग़ुर्बत व अफ़्लास का शिकार होता है । ऐसे लोगों की कफ़ालत की ज़िम्मेदारी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने साह़िबे ह़ैसिय्यत अफ़्राद के सिपुर्द की है । चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मालदारों पर ज़कात फ़र्ज़ की ताकि वोह अपनी ज़कात के ज़रीए मुआ़शरे के कमज़ोर और नादार त़बक़े की मदद करें और दौलत चन्द लोगों की मुठ्ठियों में क़ैद होने के

---

1 . . . صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب دعاءکم ایمانکم، الحدیث۸، ج۱، ص۱۴

www.dawateislami.net

बजाए मफ़्लूकुल हाल अफ़राद तक भी पहुंचती रहे और यूं मुआशरे में मआशी तवाज़ुन की फ़ज़ा क़ाइम रहे । याद रहे कि अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहता तो सब को दौलत मन्द बना देता और कोई शख़्स ग़रीब न होता, लेकिन उस ने अपनी मशिय्यत से किसी को अमीर बनाया तो किसी को ग़रीब ताकि अमीर को उस की दौलत और ग़रीब को उस की गुर्बत के सबब आज़माए । चुनान्चे पारह 8, सूरतुल अन्आम, आयत नम्बर 165 में इरशादे बारी तआला है :

وَهُوَ الَّذِیْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓىٕفَ الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّیَبْلُوَكُمْ فِیْ مَاۤ اٰتٰىكُمْ ؕ (پ۸، الانعام: ۱۶۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोही है जिस ने ज़मीन में तुम्हें नाइब किया और तुम में एक को दूसरे पर दरजों बुलन्दी दी कि तुम्हें आज़माए उस चीज़ में जो तुम्हें अ़ता की ।*

या'नी आज़माइश में डाले कि तुम ने'मत व जाहो माल पा कर कैसे शुक्र गुज़ार रहते हो और बाहम एक दूसरे के साथ किस क़िस्म के सुलूक करते हो । (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 8, अल अन्आम, तहतल आयात : 165)

मा'लूम हुवा कि दुन्या दारुल इम्तिहान (या'नी आज़माइश का घर) है, लिहाज़ा हमें चाहिये कि हर हुक्मे ख़ुदावन्दी को अपने लिये सआ़दत समझते हुवे ख़ुश दिली से अदा करें और अपनी आख़िरत के लिये अज्रो सवाब का ज़ख़ीरा इकठ्ठा करें । फिर ज़कात तो एक ऐसी इबादत है, जिस में हमारे लिये दुन्या व आख़िरत में ढेरों फ़वाइद और फ़ज़ाइल रखे गए हैं । आइये ज़कात देने के पन्दरह (15) फ़वाइद सुनिये और अपने दिलों में इस की अहम्मिय्यत को मज़ीद पुख़्ता कीजिये ।

﴾1﴿ तकमीले ईमान का ज़रीआ़

ज़कात अदा करने वाले को पहली सआ़दत मन्दी येह हासिल होती है कि ज़कात देना, उस के ईमान की तकमील का सबब बनता है । आइये ! इस ज़िम्न में दो फ़रामैने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुनिये :

www.dawateislami.net

1. तुम्हारे इस्लाम का पूरा होना येह है कि तुम अपने मालों की ज़कात अदा करो ।[1]

2. जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और उस के रसूल (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर ईमान रखता हो, उसे लाज़िम है कि अपने माल की ज़कात अदा करे ।[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾2﴿ रह़मते इलाही की बरसात

ज़कात देने वाले को दूसरी सआ़दत येह मिलती है कि उस पर रह़मते इलाही की छमा छम बारीश होती है चुनान्चे, पारह 9, सूरतुल आ'राफ़, आयत नम्बर 156 में है :

وَرَحْمَتِیْ وَسِعَتْ كُلَّ شَیْءٍؕ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِیْنَ یَتَّقُوْنَ وَیُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِیْنَ هُمْ بِاٰیٰتِنَا یُؤْمِنُوْنَۚ﴿۱۵۶﴾ (پ۹، الاعراف:۱۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और मेरी रह़मत हर चीज़ को घेरे है तो अ़न क़रीब मैं ने'मतों को उन के लिये लिख दूंगा जो डरते और ज़कात देते हैं ।*

अपनी रह़मत की अपनी अ़त़ा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे
लाज रख मेरे दस्ते दुआ़ की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾3﴿ तक़्वा व परहेज़गारी का हुसूल

ज़कात देने का तीसरा फ़ाइदा येह है कि इस से तक़्वा ह़ासिल होता है । चुनान्चे, क़ुरआने पाक में पारह 1, सूरतुल बक़रह, आयत नम्बर 3 में मुत्तक़ीन की अ़लामात में से एक अ़लामत येह भी बयान की गई है :

---

1 . . . الترغیب والترھیب، کتاب الصدقات، باب الترغیب فی اداء الزکوٰۃ، الحدیث ۱۲، ج۱، ص ۳۰۱

2 . . . المعجم الکبیر، الحدیث ۱۳۵۶۱، ج۱۲، ص ۳۲۴

www.dawateislami.net

وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿۳﴾ (پ ١، البقرة:٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हमारी दी हुई रोज़ी में से हमारी राह में उठाएं।*

﴾4﴿ कामयाबी का रास्ता

ज़कात का चौथा फ़ाइदा येह है कि इस से बन्दा कामयाब लोगों की फ़ेहरिस्त में शामिल हो जाता है। जैसा कि कुरआने पाक में फ़लाह़ को पहुंचने वालों का एक काम ज़कात भी बयान किया गया है, चुनान्चे, पारह 18, सूरतुल मुअमिनून, आयत नम्बर 1 ता 4 में इरशाद होता है :

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱﴾ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ﴿۲﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ﴿۳﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ﴿۴﴾

(پ١٨، المؤمنون: ١-٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले जो अपनी नमाज़ में गिड़ गिड़ाते हैं और वोह जो किसी बेहूदा बात की त़रफ़ इल्तिफ़ात नहीं करते और वोह कि ज़कात देने का काम करते हैं।*

﴾5﴿ नुस्रते इलाही का मुस्तहि़क़

पांचवीं फ़ज़ीलत येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ज़कात अदा करने वाले की मदद फ़रमाता है। चुनान्चे पारह 17, सूरतुल ह़ज, आयत नम्बर 40-41 में इरशाद होता है :

وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿۴۰﴾ اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿۴۱﴾ (پ١٧، الحج، ٤٠، ٤١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और बेशक **अल्लाह** ज़रूर मदद फ़रमाएगा उस की जो उस के दीन की मदद करेगा, बेशक ज़रूर **अल्लाह** कुदरत वाला ग़ालिब है, वोह लोग कि अगर हम उन्हें ज़मीन में क़ाबू दें तो नमाज़ बरपा रखें और ज़कात दें और भलाई का हुक्म करें और बुराई से रोकें और **अल्लाह** ही के लिये सब कामों का अन्जाम।*

www.dawateislami.net

﴾6﴿ मुसलमान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करना

छटा फ़ाइदा येह है कि ज़कात की अदाएगी से ग़रीबों की ज़रूरत पूरी हो जाती और उन के दिल में ख़ुशी दाख़िल होती है। याद रहे कि मुसलमान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करने का भी बड़ा सवाब है। दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक फ़राइज़ की अदाएगी के बा'द सब से अफ़्ज़ल अमल मुसलमान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करना है।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾7﴿ इस्लामी मुआशरे का हुस्न

सातवीं फ़ज़ीलत येह है कि ज़कात देने का अमल इस्लामी मुआशरे का हुस्न है कि एक ग़नी मुसलमान ग़रीब मुसलमानों को ज़कात दे कर उसे मुआशरे में सर उठा कर जीने का हौसला मुहय्या करता है। नीज़ ग़रीब का दिल कीना व हसद की शिकार गाह बनने से महफ़ूज़ रहता है, क्यूंकि वोह जानता है कि उस के ग़नी मुसलमान के माल में उस का भी हक़ है, चुनान्चे, वोह अपने भाई के जान, माल और अवलाद में बरकत के लिये दुआ गो रहता है, नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक मोमिन के लिये मोमिन मिस्ले इमारत के है, बा'ज़, बा'ज़ को तक़विय्यत पहुंचाता है।[2]

﴾8﴿ मज़बूत भाई चारा

आठवां फ़ाइदा येह है कि ज़कात मुसलमानों के दरमियान भाई चारा मज़बूत बनाने में निहायत अहम किरदार अदा करती है, जिस से इस्लामी मुआशरे में इजतिमाइय्यत को फ़रोग़ मिलता है और इमदादे बाहमी की बुन्याद पर मुसलमान अपने प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के

1... معجم کبیر، ۱۱/ ۵۹، حدیث: ۱۱۰۷۹

2... صحیح البخاری، کتاب الصلوۃ، باب تشبیک الاصابع... الخ، الحدیث ۴۸۱، ج۱، ص۱۸۱

www.dawateislami.net

इस फ़रमाने अ़ज़ीम का मिस्दाक़ बन जाते हैं कि : मुसलमानों की आपस में दोस्ती और रह़मत व शफ़्क़त की मिसाल जिस्म की त़रह़ है, जब जिस्म का कोई उ़ज़्व बीमार होता है तो बुख़ार और बे ख़्वाबी में सारा जिस्म उस का शरीक होता है ।(1)

﴾9﴿ माल पाक हो जाता है

ज़कात देने वाले को नवां फ़ाइदा येह ह़ासिल होता है कि उस का माल पाक हो जाता है, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''अपने माल की ज़कात निकाल कि वोह पाक करने वाली है, तुझे पाक कर देगी ।''(2)

﴾10﴿ बुरी सिफ़ात से छुटकारा

दसवां फ़ाइदा येह है कि ज़कात न सिर्फ़ माल को पाकीज़ा बनाती है बल्कि नफ़्स को भी पाकीज़गी बख़्शती है कि नफ़्स को लालच और बुख़्ल जैसी बुरी सिफ़ात से नजात दिलाती है ।

कुरआने पाक में पारह 4, सूरए आले इ़मरान, आयत नम्बर 180 में बुख़्ल की मज़म्मत इन अल्फ़ाज़ में बयान की गई है :

وَ لَا یَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ یَبْخَلُوْنَ بِمَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَیْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَیُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ

(پ۴، اٰل عمرٰن: ۱۸۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो बुख़्ल करते हैं उस चीज़ में जो* ***अल्लाह*** *ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दी हरगिज़ उसे अपने लिये अच्छा न समझे बल्कि वोह उन के लिये बुरा है अ़न क़रीब वोह जिस में बुख़्ल किया था क़ियामत के दिन उन के गले का त़ौक़ होगा ।*

---

1 . . . صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب تراحم المؤمنین . . الخ، الحدیث ۲۵۸۶، ص ۱۳۹۶

2 . . . مسند امام احمد، مسند انس بن مالک، حدیث: ۱۲۳۹۷، ج ۴، ص ۲۷۴

www.dawateislami.net

मुझे मालो दौलत की आफ़त ने घेरा बचा या इलाही बचा या इलाही
न दे जाहो हश्मत न दौलत की कसरत गदाए मदीना बना या इलाही
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾11﴿ माल की बरकत

ज़कात का ग्यारहवां फ़ाइदा येह है कि ज़कात देने वाले का माल कम नहीं होता, बल्कि दुन्या व आख़िरत में बढ़ता है। **अल्लाह** तआ़ला, पारह 22, सूरए सबा आयत नम्बर 39 में इरशाद फ़रमाता है :

وَمَاۤ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَهُوَ یُخْلِفُهٗۚ وَهُوَ خَیْرُ الرّٰزِقِیْنَ ﴿۳۹﴾ (پ۲۲، سبا:۳۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो चीज़ तुम **अल्लाह** की राह में ख़र्च करो वोह इस के बदले और देगा और वोह सब से बेहतर रिज़्क़ देने वाला है।*

एक और मक़ाम पर पारह 3, सूरतुल बक़रह, आयत नम्बर 261-262 में इरशाद होता है :

مَثَلُ الَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِیْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍؕ وَاللّٰهُ یُضٰعِفُ لِمَنْ یَّشَآءُؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِیْمٌ ﴿۲۶۱﴾ اَلَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا یُتْبِعُوْنَ مَاۤ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَاۤ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ﴿۲۶۲﴾ (پ۳، البقرة: ۲۶۲،۲۶۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन की कहावत जो अपने माल **अल्लाह** की राह में ख़र्च करते हैं उस दाने की त़रह़ जिस ने उगाईं सात बालीं, हर बाल में सो दाने और **अल्लाह** इस से भी ज़ियादा बढ़ाए जिस के लिये चाहे और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है, वोह जो अपने माल **अल्लाह** की राह में ख़र्च करते हैं, फिर दिये पीछे न एह़सान रखें न तक्लीफ़ दें उन का नेग (इन्आ़म) उन के रब के पास है और उन्हें न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म।*

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि ज़कात देने वाले को येह यक़ीन रखते हुवे ख़ुश दिली से ज़कात देनी चाहिये कि **अल्लाह** तआ़ला उस को बेहतर बदला अ़ता फ़रमाएगा । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : "सदक़े से माल कम नहीं होता ।" (المعجم الاوسط، الحدیث ۲۲۷۰، ج۱، ص۶۱۹)

अगर्चे ज़ाहिरी तौ़र पर माल कम होता है, लेकिन ह़क़ीक़त में बढ़ रहा होता है, जैसे दरख़्त से ख़राब होने वाली शाख़ों को उतारने में ब ज़ाहिर दरख़्त में कमी नज़र आ रही होती है, लेकिन येह उतारना उस की नश्वो नुमा का सबब है । मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं, ज़कात देने वाले की ज़कात हर साल बढ़ती ही रहती है, येह तजरिबा है कि जो किसान खेत में बीज फेंक आता है, वोह ब ज़ाहिर बोरियां ख़ाली कर लेता है, लेकिन ह़क़ीक़त में मअ़ इज़ाफ़े के भर लेता है । घर की बोरियां चूहे, सुरसुरी वग़ैरा की आफ़ात से हलाक हो जाती हैं या येह मत़लब है कि जिस माल में से सदक़ा निकलता रहे, उस में से ख़र्च करते रहो, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बढ़ता ही रहेगा, कूएं का पानी भरे जाओ, तो बढ़े ही जाएगा ।[1]

﴾12﴿ माल के शर से ह़िफ़ाज़त

बारहवां फ़ाइदा येह है कि ज़कात देने वाला माल के शर से मह़फ़ूज़ हो जाता है । रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : जिस ने अपने माल की ज़कात अदा कर दी, बेशक उस से माल का शर दूर हो गया ।[2]

1...मिरआतुल मनाजीह़ 3-93

2 ... المعجم الاوسط، باب الالف من اسمہ احمد، الحدیث، ۱۵۷۹، ج۱، ص۴۳۱

www.dawateislami.net

﴾13﴿ हिफ़ाज़ते माल का सबब

तेरहवां फ़ाइदा येह है कि ज़कात देना हिफ़ाज़ते माल का सबब है, जैसा कि फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "अपने मालों को ज़कात दे कर मज़बूत क़ल्ओं में कर लो और अपने बीमारों का इलाज ख़ैरात से करो।" (مراسیل ابی داؤد مع سنن ابی داؤد، باب فی الزکاۃ، ص۸)

﴾14﴿ हाजत रवाई

चौदहवीं फ़ज़ीलत येह है कि **अल्लाह** तआला ज़कात देने वालों की हाजत रवाई फ़रमाएगा। इस ज़िम्न में दो फ़रामैने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनिये :

1. जिस ने किसी तंगदस्त के लिये आसानी की, **अल्लाह** तआला उस के लिये दुन्या और आख़िरत में आसानी कर देगा।

(صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعائ، باب فضل الاجتماع ع....الخ، الحدیث ۲۶۹۹، ص۱۴۴۷)

2. जो किसी मुसलमान को दुन्यावी तक्लीफ़ से रिहाई दे तो **अल्लाह** तआला उस से क़ियामत के दिन की मुसीबत दूर फ़रमाएगा।

(جامع الترمذی، کتاب الحدود، باب ماجاء فی الستر علی المسلم، الحدیث، ج۳، ص۱۱۵)

﴾15﴿ दुआएं मिलती हैं

और पन्दरहवां फ़ाइदा येह है कि ज़कात से ग़रीबों की दुआएं मिलती हैं, जिस से रह़मते ख़ुदावन्दी और मददे इलाही عَزَّوَجَلَّ ह़ासिल होती है। जैसा कि प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम को **अल्लाह** तआला की मदद और रिज़्क़ ज़ईफ़ों की बरकत और उन की दुआओं के सबब पहुंचता है।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ...صحیح البخاری، کتاب الجہاد، باب عن استعان بالضعفاء،...الخ، الحدیث، ۲۸۹۶، ج۲، ص۲۸۰

www.dawateislami.net

किताब 'फ़ैज़ाने ज़कात' का तआरुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी आप ने ज़कात की जो बरकतें सुनीं, येह दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब **'फ़ैज़ाने ज़कात'** से कुछ तब्दीली के साथ ली गई हैं, 149 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल इस किताब में ज़कात की अहम्मिय्यत, इस के फ़ज़ाइल और न देने के नुक़्सानात नीज़ ज़कात के मौज़ूअ़ पर ढेरों शरई मसाइल भी जम्अ़ किये गए हैं । इ़लावा अज़ीं इस किताब में सदक़ए फ़ित्र और उ़श्र के फ़ज़ाइल व मसाइल को भी इन्तिहाई आसान पैराए में पेश करने की कोशिश की गई है ताकि अ़वाम को समझने में आसानी हो और वोह इस से भरपूर इस्तिफ़ादा कर सकें । इस अहम किताब को हदिय्यतन ह़ासिल कर के न सिर्फ़ ख़ुद पढ़िये, बल्कि दूसरे मुसलमानों को भी लंगरे रसाइल या'नी तोह़्फ़तन पेश कर के ख़ूब सवाब कमाइये । दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net से इस किताब को रीड या'नी पढ़ा भी जा सकता है, डाऊन लोड (Download) भी किया जा सकता है और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़कात दूसरी सिने हिजरी में रोज़ों से पहले फ़र्ज़ हुई । (درمختار، کتاب الزکوۃ، ۳/۲۰۲) जब ज़कात फ़र्ज़ हुई तो मालदार सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ख़ुश दिली और इन्तिहाई जोश व जज़्बे के साथ अपने मालों की ज़कात दिया करते । आइये इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ सुनते हैं । चुनान्चे,

सह़ाबए किराम का जज़्बा

ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि एक मरतबा सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे ज़कात वुसूल करने के लिये भेजा तो मैं एक शख़्स के यहां पहुंचा । उन्हों ने अपना

www.dawateislami.net

सारा माल मेरे पास जम्अ़ किया, मैं ने देखा कि उन में एक साला ऊंटनी लाज़िम आती थी। मैं ने उन से कहा कि अपनी ज़कात में एक साला ऊंटनी दे दो, क्यूंकि येही तुम्हारे इन ऊंटों की ज़कात है। उन्हों ने कहा : "एक साल की ऊंटनी किस काम आएगी ? वोह न तो सुवारी का काम दे सकती है न दूध का, येह देखिये एक ताक़तवर और मोटी ऊंटनी है, आप इसे ज़कात में ले जाइये।" मैं ने कहा : मैं ऐसी शै हरगिज़ नहीं लूंगा जिस का मुझे हुक्म नहीं फ़रमाया गया। हां ! अलबत्ता हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुम्हारे क़रीब ही हैं, अगर तुम्हारा दिल चाहे तो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर ख़ुद इसे पेश कर दो। अगर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़बूल फ़रमा ली तो मैं ले लूंगा और इन्कार फ़रमाया तो नहीं लूंगा। उन्हों ने कहा ठीक है और वोह उसी ऊंटनी को ले कर मेरे साथ चल पड़े। जब हम हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पहुंचे तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप का क़ासिद मेरे माल की ज़कात वुसूल करने के लिये मेरे पास आया और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस से पहले कभी मुझे येह सआ़दत नसीब नहीं हुई कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने या आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ासिद ने मेरे माल को मुलाहज़ा फ़रमाया हो। मैं ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ासिद के सामने अपने तमाम ऊंट पेश कर दिये तो इन के ख़याल में मुझ पर एक साल की ऊंटनी लाज़िम आती थी। अब चूंकि एक साल की ऊंटनी न तो दूध का काम दे सकती है और न ही सुवारी का, इस लिये मैं ने एक जवान, सिह़्ह़त मन्द ऊंटनी पेश की, कि येह इसे ज़कात में क़बूल कर लें, लेकिन इन्हों ने लेने से इन्कार कर दिया। या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह ऊंटनी मैं आप की बारगाह में लाया हूं, आप इसे क़बूल फ़रमा लें। प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम पर लाज़िम तो वोही है। हां ! अगर तुम अपनी ख़ुशी से ज़ियादा उ़म्र की ऊंटनी देते हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें इस का अज्र देगा और हम इसे क़बूल कर लेते

www.dawateislami.net

हैं । उन्हों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह ऊंटनी येही है जो मैं अपने साथ लाया हूं, आप इसे क़बूल फ़रमा लें, तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे लेने की इजाज़त दे दी और उन के माल में बरकत की दुआ़ फ़रमाई ।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के दिलों में ज़कात अदा करने का कितना जज़्बा था कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में देने के लिये अपना सब से उ़म्दा माल पेश करते और इसे अपने लिये बाइ़से सआ़दत समझते । मगर अफ़सोस ! एक हम हैं कि ख़ुश दिली से ज़कात अदा करना तो दूर की बात, हमारी बहुत बड़ी ता'दाद सिरे से ज़कात अदा ही नहीं करती । याद रखिये ! क़ुरआने मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद में पारह 10, सूरतुत्तौबा, आयत नम्बर 34 में ज़कात अदा न करने वालों के बारे में सख़्त वईद आई है, चुनान्चे इरशादे ख़ुदावन्दी है :

وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۳۴﴾ (پ۱۰، التوبۃ: ۳۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह कि जोड़ कर रखते हैं सोना और चांदी और इसे* **अल्लाह** *की राह में ख़र्च नहीं करते उन्हें ख़ुश ख़बरी सुनाओ दर्द नाक अ़ज़ाब की ।*

ज़कात न देने वालों के बारे में वईदों पर मुश्तमिल दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم समाअ़त कीजिये :

1. दोज़ख़ में सब से पहले तीन[3] शख़्स जाएंगे, इन में एक वोह मालदार भी है जो अपने माल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ (ज़कात) अदा नहीं करता ।[2]

---

1 ... ابوداود، کتاب الزکاۃ، باب زکاۃ السائمۃ، ۲/۱۴۸، حدیث: ۱۵۸۳

2 ... ابن خزیمۃ، کتاب الزکاۃ، باب ذکر ادخال مانع الزکاۃ... الخ، الحدیث: ۲۲۴۹، ج۴، ص۸ ملخصًا

www.dawateislami.net

2. जो शख़्स सोने चांदी का मालिक हो और इस का हक़ (या'नी ज़कात) अदा न करे तो क़ियामत के दिन उस के लिये आग की सिलें बिछाई जाएंगी जिन्हें जहन्नम की आग में तपाया (गर्म किया) जाएगा और उन से उस की करवट, पेशानी और पीठ दाग़ी जाएगी, जब भी वोह ठन्डी होने पर आएंगी, दोबारा वैसी ही कर दी जाएंगी। (येह मुआ़मला जारी रहेगा) उस दिन में जिस की मिक़्दार पचास हज़ार (50,000) बरस है, यहां तक कि बन्दों के दरमियान फ़ैसला हो जाए, अब वोह अपनी राह देखेगा, ख़्वाह जन्नत की त़रफ़ जाए या जहन्नम की त़रफ़।[1]

डर लग रहा है आह! जहन्नम की आग से बख़्शिश का मुझ को मुज़्दा सुना दीजिये हुज़ूर

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बेशक **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन ह़कीम (ह़िक्मत वाला) है और ह़कीम का कोई काम ह़िक्मत से ख़ाली नहीं होता, उस ने अपने बन्दों के लिये जितने भी अह़काम नाज़िल फ़रमाए, वोह सब ह़िक्मत से भरपूर हैं, अगर्चे हमारी नाक़िस अ़क़्लें उन ह़िक्मतों तक रसाई ह़ासिल न कर सकें। ज़कात भी एक ऐसा फ़रीज़ा है, जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बे शुमार ह़िक्मतें रखी हैं। आइये इन में से चन्द ह़िक्मतें सुनते हैं।

ज़कात की अदाएगी की ह़िक्मतें

1. सख़ावत इन्सान का कमाल है और बुख़्ल ऐ़ब है। इस्लाम ने ज़कात की अदाएगी जैसा प्यारा अ़मल मुसलमानों को अ़त़ा फ़रमाया ताकि इन्सान में सख़ावत जैसा कमाल पैदा हो और बुख़्ल जैसा बद तरीन ऐ़ब उस की ज़ात से ख़त्म हो।

2. जैसे एक मुल्की निज़ाम होता है कि हमारी कमाई में हुकूमत का भी ह़िस्सा होता है, जिसे वोह टेक्स के त़ौर पर वुसूल करती है और फिर वोही टेक्स हमारे ही मफ़ाद में या'नी मुल्की इन्तिज़ाम पर ख़र्च होता है, बिला तश्बीह हमें

---

1 ... صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب اثم مانع الزکوۃ، حدیث: ۹۸۷، ص۴۹۱

www.dawateislami.net

मालो दौलत और दीगर तमाम ने'मतों से नवाज़ने वाली हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ही की प्यारी ज़ाते पाक है और ज़कात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ है, जो हमारे ही ग़ुरबा पर ख़र्च किया जाता है।

3. रब عَزَّوَجَلَّ चाहता तो सब को मालो दौलत अ़त़ा फ़रमा कर ग़नी कर देता, लेकिन उस की मशिय्यत है कि उस ने अपने ही बन्दों में बा'ज़ों को अमीर और दौलत मन्द किया और बा'ज़ों को ग़रीब रखा और अमीरों या'नी साह़िबे निसाब पर ज़कात की अदाएगी लाज़िम कर दी ताकि इस से अमीरों और ग़रीबों में प्यार, मह़ब्बत और बाहमी इमदाद का जज़्बा पैदा हो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत को सब मिल बांट कर खाएं और उस का शुक्र अदा करें।

4. शरीअ़त ने ज़कात फ़र्ज़ कर के कोई अन्होनी चीज़ फ़र्ज़ नहीं की बल्कि अगर हम अपने अत़राफ़ में ग़ौरो फ़िक्र करें तो ज़कात की ह़क़ीक़त हर जगह मौजूद है। जैसे कि फलों का गूदा इन्सान के लिये है मगर छिलका जानवरों का ह़क़ है। गन्दुम में फल (या'नी बीज) हमारा ह़िस्सा मगर भूसा जानवरों का, गन्दुम में भी आटा हमारा है तो भूसी जानवरों की। हमारे जिस्म में बाल और नाख़ुन वग़ैरा का ह़द्दे शरई से बढ़ने की सूरत में अ़लाह़दा करना ज़रूरी है कि येह सब जिस्म की ज़कात या'नी इज़ाफ़ी चीज़ मेल हैं। बीमारी तन्दुरुस्ती की ज़कात, मुसीबत राह़त की ज़कात, नमाज़ें दुन्यावी कारोबार की गोया ज़कात हैं।

5. अगर हर वोह शख़्स जिस पर ज़कात फ़र्ज़ है, ज़कात की अदाएगी का इल्तिज़ाम (या'नी अपने ऊपर लाज़िम) कर ले तो मुसलमान कभी दूसरों के मोह़ताज न होंगे। मुसलमानों की ज़रूरतें मुसलमानों से ही पूरी हो जाएंगी और किसी को भीक मांगने की भी ह़ाजत न होगी।[1]

बहर ह़ाल दौलत को तिजोरियों में बंद (या'नी बेंक में जम्अ़) करने के बजाए, ज़कात व सदक़ात की सूरत में राहे ख़ुदा में ख़र्च करें, वरना यक़ीन कीजिये कि ज़कात अदा न करना, आख़िरत के दर्दनाक अ़ज़ाब और दुन्या में

1....रसाइले नईमिय्या, स. 298, बित्तसर्रुफ़

www.dawateislami.net

मआ़शी बद ह़ाली का सबब बन सकता है । ज़कात अदा न करने के बे शुमार नुक़्सानात हैं उन में से चन्द येह हैं ।

माल की बरबादी

ज़कात न देना माल की बरबादी का सबब है । आइये ! इस ज़िम्न में दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم समाअ़त फ़रमाइये :

1. ख़ुश्की व तरी में जो माल ज़ाएअ़ हुवा है, वोह ज़कात न देने की वजह से तलफ़ हुवा है ।[1]

2. ज़कात का माल जिस में मिला होगा, उसे तबाह व बरबाद कर देगा ।[2]

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अजमद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِى इस ह़दीस की वज़ाह़त करते हुवे लिखते हैं : बा'ज़ अइम्मा ने इस ह़दीस के येह मा'ना बयान किये कि ज़कात वाजिब हुई और अदा न की और अपने माल में मिलाए रहा तो येह ह़राम उस ह़लाल को हलाक कर देगा और इमाम अह़मद رَحمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया कि मा'ना येह हैं कि मालदार शख़्स माले ज़कात ले तो येह माले ज़कात उस के माल को हलाक कर देगा कि ज़कात तो फ़क़ीरों के लिये है और दोनों मा'ना सह़ीह़ हैं ।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा 5, स. 871)

इजतिमाई नुक़्सान

ज़कात अदा न करने वाली क़ौम को इजतिमाई नुक़्सान का सामना करना पड़ेगा । आइये इस बारे में दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनिये :

1. जो क़ौम ज़कात न देगी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे क़ह़त़ में मुब्तला फ़रमाएगा ।[3]

2. जब लोग ज़कात की अदाएगी छोड़ देते हैं, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बारिश को रोक देता है, अगर ज़मीन पर चोपाए मौजूद न होते तो आस्मान से पानी का एक क़त़रा भी न गिरता ।[4]

---

1 ... مجمع الزوائد، کتاب الزکوٰۃ، باب فرض الزکوٰۃ، الحدیث ۴۳۳۵، ج۳، ص۲۰۰

2 ... شعب الایمان، باب فی الزکوٰۃ، فصل فی الاستعفاف، الحدیث ۳۵۲۲، ج۳، ص۲۷۳

3 ... معجم الاوسط، ۳/۲۷۵، حدیث: ۴۵۷۷

4 ... سنن ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب العقوبات، الحدیث ۴۰۱۹، ج۴، ص۳۶۷

www.dawateislami.net

माल, वबाल बन जाएगा

ज़कात न देने वाले के लिये बरोज़े क़ियामत येही माल, वबाले जान बन जाएगा। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : जिस को **अल्लाह** तआ़ला ने माल दिया और वोह उस की ज़कात अदा न करे तो क़ियामत के दिन वोह माल गन्जे सांप की सूरत में कर दिया जाएगा, जिस के सर पर दो सियाह निशान होंगे, वोह सांप उस के गले में तौ़क़ बना कर डाल दिया जाएगा। फिर उस (ज़कात न देने वाले) की बाछें पकड़ेगा और कहेगा : "मैं तेरा माल हूं, मैं तेरा ख़ज़ाना हूं।"[1]

हिसाब में सख़्ती

ज़कात न देने वाले के हिसाब में सख़्ती की जाएगी, जैसा कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "फ़क़ीर हरगिज़ नंगे भूके होने की तक्लीफ़ न उठाएंगे, मगर अग़नियां के हाथों, सुन लो ऐसे मालदारों से **अल्लाह** तआ़ला सख़्त हिसाब लेगा और उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब देगा।[2]

अ़ज़ाबात का नक़्शा

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी मश्हूरे ज़माना तालीफ़ 'फ़ैज़ाने सुन्नत' जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 405 पर लिखते हैं :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! ज़कात अदा करने के जहां बे शुमार सवाबात हैं न देने वाले के लिये वहां ख़ौफ़नाक अ़ज़ाबात भी हैं,

चुनान्चे, मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن कुरआनो ह़दीस में बयान कर्दा अ़ज़ाबात

---

1 ... صحیح البخاری، کتاب الزکوۃ، باب اثم مانع الزکوۃ، الحدیث ۱۴۰۳، ج۱، ص۴۷۴

2 ... مجمع الزوائد، کتاب الزکوۃ، باب فرض الزکوۃ، الحدیث ۴۳۲۴، ج۳، ص۱۹۷

www.dawateislami.net

का नक़्शा खींचते हुवे फ़रमाते हैं : "खुलासा येह है कि जिस सोने चांदी की ज़कात न दी जाए, रोज़े क़ियामत जहन्नम की आग में तपा कर इस से उन की पेशानियां, करवटें, पीठें दागी़ जाएंगी । उन के सर, पिस्तान पर जहन्नम का गर्म पथ्थर रखेंगे कि छाती तोड़ता शाने से निकल जाएगा और शाने की हड्डी पर रखेंगे कि हड्डियां तोड़ कर सीने से निकल आएगा, पीठ तोड़ कर करवट से निकलेगा, गुद्दी तोड़ कर पेशानी से उभरेगा । जिस माल की ज़कात न दी जाएगी रोज़े क़ियामत पुराना ख़बीस खूं ख़्वार अज़दहा बन कर उस के पीछे दौड़ेगा, येह हाथ से रोकेगा, वोह हाथ चबा लेगा, फिर गले में तौ़क़ बन कर पड़ेगा, इस का मुंह अपने मुंह में ले कर चबाएगा कि मैं हूं तेरा माल, मैं हूं तेरा ख़ज़ाना । फिर उस का सारा बदन चबा डालेगा । وَالْعِیَاذُ بِاللّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْن [1]

मेरे आक़ा आ'ला हज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ज़कात न देने वाले को क़ियामत के अ़ज़ाब से डरा कर समझाते हुवे फ़रमाते हैं : "ऐ अ़ज़ीज़ ! क्या ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ व रसूल (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के फ़रमान को यूंही हंसी ठठ्ठा समझता है या (क़ियामत के एक दिन या'नी) पचास हज़ार (50,000) बरस की मुद्दत में येह जांकाह मुसीबतें झेलनी सह्ल जानता है, ज़रा यहीं की आग में एक आध रूपिया (छोटा सा सिक्का) गर्म कर के बदन पर रख कर देख, फिर कहां येह ख़फ़ीफ़ (हल्की सी) गर्मी, कहां वोह क़हर आग, कहां येह एक ही रूपिया कहां वोह सारी उ़म्र का जोड़ा हुवा माल, कहां येह मिनट भर की देर, कहां वोह हज़ार दिन बरस की आफ़त, कहां येह हल्का सा चहका (या'नी मा'मूली सा दाग़) कहां वोह हड्डियां तोड़ कर पार होने वाला ग़ज़ब । अल्लाह तआ़ला मुसलमान को हिदायत बख़्शे ।[2]

---

1 ....फ़तावा रज़विय्या, 10/153

2 ....फ़तावा रज़विय्या, 10/175

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ज़कात व सदक़ात के ज़रूरी अहकामात की मा'लूमात हासिल होती रहेंगी और अमल के जज़्बे में भी इज़ाफ़ा होता चला जाएगा । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें हर दम दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माहोल से वाबस्ता रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए । اٰمین بجاہِ النبی الامین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बयान का खुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने सुना कि ज़कात अदा न करने वाले किस क़दर ख़सारे में हैं कि दुन्या में भी नुक़्सान उठाएंगे और आख़िरत में भी दर्दनाक अज़ाब में मुब्तला होंगे । क़ारून का वाक़िआ क़ाबिले इब्रत है कि जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बे पनाह दौलत से नवाज़ा था लेकिन जब ज़कात देने का वक़्त आया तो माल की महब्बत ने उसे ज़कात अदा करने से रोक दिया और यूं वोह हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام पर तोहमत लगाने की मज़मूम कोशिश करते हुवे ग़ज़बे इलाही का शिकार हुवा और अपने बुलन्दो बाला मकान और ख़ज़ानों समेत ज़मीन में धंसा दिया गया और क़ियामत तक धंसता ही चला जाएगा । ज़कात देना ईमान की तक्मील का ज़रीआ है, ज़कात देने वाले पर रहमते इलाही की बरसात होती है, ज़कात देने से तक़्वा व परहेज़गारी और फ़लाहो कामयाबी हासिल होती है । ज़कात से इस्लामी भाईचारे को फ़रोग़ मिलता है नीज़ माल की हिफ़ाज़त होती है, माल पाक हो जाता है और उस में बरकत नाज़िल होती है । ज़कात देने वाला शर से महफ़ूज़ हो जाता है और उसे ग़रीबों और ज़ईफ़ों की दुआएं मिलती हैं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भी अपने मालों की ज़कात अदा करने और ज़ियादा से ज़ियादा अपनी राह में ख़र्च करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए । اٰمین بجاہِ النبی الامین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मजलिसे इफ़्ता का तआ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी भी क़िस्म की शरई रहनुमाई और मसाइल के ह़ल के लिये दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत से रुजूअ़ करें ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के शो'बा जात में से एक शो'बा 'मजलिसे इफ़्ता' भी है, जिस के तह़्त सब से पहला दारुल इफ़्ता 15 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म सिने 1421 हिजरी को जामेअ़ मस्जिद कन्ज़ुल ईमान, बाबरी चौक बाबुल मदीना (कराची) में क़ाइम हुवा और कराची के मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों और ता ह़ाल पाकिस्तान के मुख़्तलिफ़ शहरों में भी दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत क़ाइम हो चुके हैं, जहां मुफ़्तियाने किराम और उ़लमाए किराम उम्मते मुस्लिमा की शरई रहनुमाई में मसरूफ़े अ़मल हैं । इस के इ़लावा मजलिसे इफ़्ता के तह़्त एक शो'बा 'दारुल इफ़्ता ऑन लाइन' भी है जहां इफ़्ता के इस्लामी भाई इन्तिहाई ज़िम्मेदारी से टेलीफ़ोन और इन्टरनेट पर दुन्या भर के मुसलमानों की त़रफ़ से पूछे जाने वाले मसाइल का हाथों हाथ ह़ल बताते हैं । दारुल इफ़्ता ऑन लाइन के इस्लामी भाइयों से इन्टरनेट के ज़रीए दुन्या भर से इस ई-मेल एड्रेस (darulifta@dawateislami.net) पर सुवालात पूछे जा सकते हैं ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

12 मदनी कामों में ह़िस्सा लीजिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुन्नतों पर अ़मल का जज़्बा पाने और ख़ुद को फ़राइज़ व वाजिबात, सुनन व मुस्तह़ब्बात का पाबन्द बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये और नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लीजिये । ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से रोज़ाना का एक मदनी काम चौक दर्स भी है । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ चौक दर्स मुसलमानों को बुराइयों से बचाने, नेकियों में रग़बत बढ़ाने, नमाज़ों की पाबन्दी का ज़ेह्न बनाने के साथ साथ

www.dawateislami.net

इल्मे दीन की बहुत सी बातें सीखने सिखाने का ज़रीआ़ है और लोगों तक इल्मे दीन की बातें पहुंचाना, अज्रो सवाब का काम है।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जो शख़्स मेरी उम्मत तक कोई इस्लामी बात पहुंचाए ताकि इस से सुन्नत क़ाइम की जाए या इस से बद मज़हबी दूर की जाए तो वोह जन्नती है।" (حلیۃ الاولیاء، ۱۰/۴۵، حدیث: ۱۴۴۶۶)

एक और ह़दीसे पाक में है : "**अल्लाह** तआ़ला उस को तरो ताज़ा रखे जो मेरी ह़दीस को सुने, याद रखे और दूसरों तक पहुंचाए।"

(ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی الحث علی تبلیغ السماع، ۴/۲۹۸، حدیث: ۲۶۶۵)

हर कलिमे पर साल भर की इबादत का सवाब

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो अपने भाई को नेकी का हुक्म करे और बुराई से रोके, उस की जज़ा क्या है ? **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया : मैं उस के हर कलिमे के बदले एक एक साल की इबादत का सवाब लिखता हूं और उसे जहन्नम की सज़ा देने में मुझे ह़या आती है।

(مکاشفۃ القلوب، ص۴۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि नेकी की दा'वत देने के किस क़दर फ़ज़ाइल हैं, चौक दर्स भी मुसलमानों को नेकी की दा'वत देने, बुराई से मन्अ़ करने और इल्मे दीन सिखाने का अहम ज़रीआ़ है कि लोग बाज़ारों में बैठे बद निगाही, फ़ुज़ूल बातों और त़रह़ त़रह़ के गुनाहों में मश्ग़ूल हो सकते हैं, बा'ज़ अवक़ात चौक दर्स में शिर्कत की बरकत से इन की ज़िन्दगी में ऐसा मदनी इन्क़िलाब बरपा हो जाता है कि वोह अपनी गुनाहों भरी ज़िन्दगी से तौबा कर के नेकियों की राह पर गामज़न हो जाते हैं। आइये इस ज़िम्न में एक मदनी बहार सुनते हैं।

www.dawateislami.net

अय्याश नौजवान

ज़म ज़म नगर, हैदराबाद (बाबुल इस्लाम सिंध) के अ़लाक़े महबूब टाऊन में मुक़ीम इस्लामी भाई अपनी ख़ुशगवार रसीदा ज़िन्दगी में मदनी बहार आने का तज़किरा कुछ यूं करते हैं कि : मैं एक अय्याश नौजवान था। बुराइयों की दलदल में इस क़दर धंस चुका था कि शराब नोशी जैसी आ़दते बद में गिरिफ़्तार हो गया। एक दिन दा'वते इस्लामी से वाबस्ता इस्लामी भाई ने शफ़्क़त भरे अन्दाज़ में चौक दर्स में शिर्कत की दा'वत पेश की, मैं उन की दा'वत क़बूल करते हुवे सुन्नतों भरे दर्स में शरीक हो गया। दर्स के पुर तासीर अल्फ़ाज़ ने मेरे दिल की दुन्या ही बदल डाली। रफ़्ता रफ़्ता इस्लामी भाइयों की इनफ़िरादी कोशिश की बरकत से मदनी माहोल के क़रीब से क़रीब तर होता चला गया। आ़शिक़ाने मुस्त़फ़ा की सोहबत की बरकत से माहे रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरे के तर्बिय्यती ए'तिकाफ़ की सआ़दत मिली। इल्मे दीन सीखने को मिला, अच्छे लोगों की सोहबत क्या मिली दिल की सियाही धुलने लगी। नमाज़ से कोसों दूर भागने वाला शख़्स मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने वाला बन गया। शराब की मस्ती में मस्त रहने वाला इ़श्क़े मुस्त़फ़ा में तड़पने वाला बन गया। महके महके मदनी माहोल की पुर बहार फ़ज़ाओं में ऐसा ज़ेहन बना कि मैं मुश्कबार मदनी माहोल से वाबस्ता हो गया और मुझे शराब नोशी और गुनाहों की दीगर नुहूसतों से नजात मिल गई।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत

www.dawateislami.net

निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से महब्बत की उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने मुझ से महब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।[1]

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा

जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

आइये शैखे़ त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले '101 मदनी फूल' से इस्मिद के चार हुरूफ़ की निस्बत से सुरमा लगाने के चार मदनी फूल सुनिये :

सुरमा लगाने के चार मदनी फूल

1. सुनने इब्ने माजा की रिवायत में है : तमाम सुरमों में बेहतर सुरमा 'इस्मिद' (اِثْـمِد) है कि येह निगाह को रोशन करता और पलकें उगाता है ।

(ابنِ ماجه، کتاب الطب، باب الکحل بالاثمد، ۴/ ۱۱۵، حدیث: ۳۴۹۷)

2. पथ्थर का सुरमा इस्ति'माल करने में ह़रज नहीं और सियाह सुरमा या काजल ब क़स्दे ज़ीनत (या'नी ज़ीनत की निय्यत से) मर्द को लगाना मकरूह है और ज़ीनत मक़्सूद न हो तो कराहत नहीं । (فتاوٰی عالمگیری، ۵/ ۳۵۹)

3. सुरमा सोते वक़्त इस्ति'माल करना सुन्नत है । (मिरआतुल मनाजीह़, 6/180)

4. सुरमा इस्ति'माल करने के तीन मन्क़ूल त़रीक़ों का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है : (1) कभी दोनों आंखों में तीन तीन सलाइयां (2) कभी दाईं (सीधी) आंख में तीन और बाईं (उल्टी) में दो, (3) तो कभी दोनों आंखों में दो दो और फिर आख़िर में एक सलाई को सुरमे वाली कर के उसी को बारी बारी दोनों आंखों में लगाइये । (شعب الایمان، باب فی الملابس والاوانی، فصل فی الکحل، ۵/ ۲۱۸۔ ۲۱۹)

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा 16 (304 सफ़ह़ात) नीज़ (120 सफ़ह़ात) की किताब '**सुन्नतें और आदाब**' हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तर्बिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

---

1 . . . مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/ ۹۷، حدیث: ۱۷۵

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 7 दुरूदे पाक

﴾1﴿ शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ الْحَبِیْبِ الْعَالِی الْقَدْرِ الْعَظِیْمِ الْجَاہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा तो मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र में अपने रहमत भरे हाथों से उतार रहे हैं ।** (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السّادات ص ۱۵۱ ملخصًا)

﴾2﴿ तमाम गुनाह मुआ़फ़ :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلِّمْ

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के **गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।** (اَیضاً ص ۶۵)

﴾3﴿ रहमत के सत्तर दरवाज़े : صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर **रहमत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं ।** (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۲۷۷)

﴾4﴿ एक हज़ार दिन की नेकियां :

جَزَی اللّٰہُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا ھُوَ اَھْلُہٗ

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक को पढ़ने वाले के लिये **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं ।** (مَجْمَعُ الزَّوَائِد)

www.dawateislami.net

﴾5﴿ छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِیْ عِلْمِ اللّٰہِ صَلَاۃً دَآئِمَۃً بِدَوَامِ مُلْکِ اللّٰہِ

हज़रते अहमद सावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** ह़ासिल होता है । (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات)

﴾6﴿ कुर्बे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَہٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान बिठा लिया । इस से सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को तअ़ज्जुब हुवा कि **येह कौन ज़ी मर्तबा है !!!** जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है । (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۱۲۵)

﴾7﴿ दुरूदे शफ़ाअ़त :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْہُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَکَ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ

शाफ़ेए उमम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है ! ! !**

(الترغیب والترہیب ج۲ص۳۲۹،حدیث۳۱)

📖 बयान करने के मुतअ़ल्लिक़ मा'रूज़ात 📖

(1) बयान करने से पहले कम अज़ कम एक बार ज़रूर ज़रूर और ज़रूर पढ़ लें
(2) जो कुछ लिखा है वोही सुनाएं, अपनी त़रफ़ से कमी-बेशी न करें
(3) हेडिंग, ह़वालाजात, आयात, और अ़रबी इबारात हरगिज़ न पढ़ा करें
(4) बयान के हुसूल के लिये अपनी काबीना के कारकर्दगी ज़िम्मेदार से राबित़ा रखें
(4) अगर बराहे रास्त बयान न मिल सके तो वेब साइट से डाऊन लोड कर लें

✍ राबित़ा ✍

MAJLISE TARAJIM, BARODA (DAWATE ISLAMI)

translation.baroda@dawateislami.net (+ 91 9327776311)

www.dawateislami.net

www.dawateislami.net